

# युगसन्धि: महान् परिवर्तन की बेला

प्रज्ञावतार की विस्तार प्रक्रिया और विज्ञान (अध्याय १-४)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

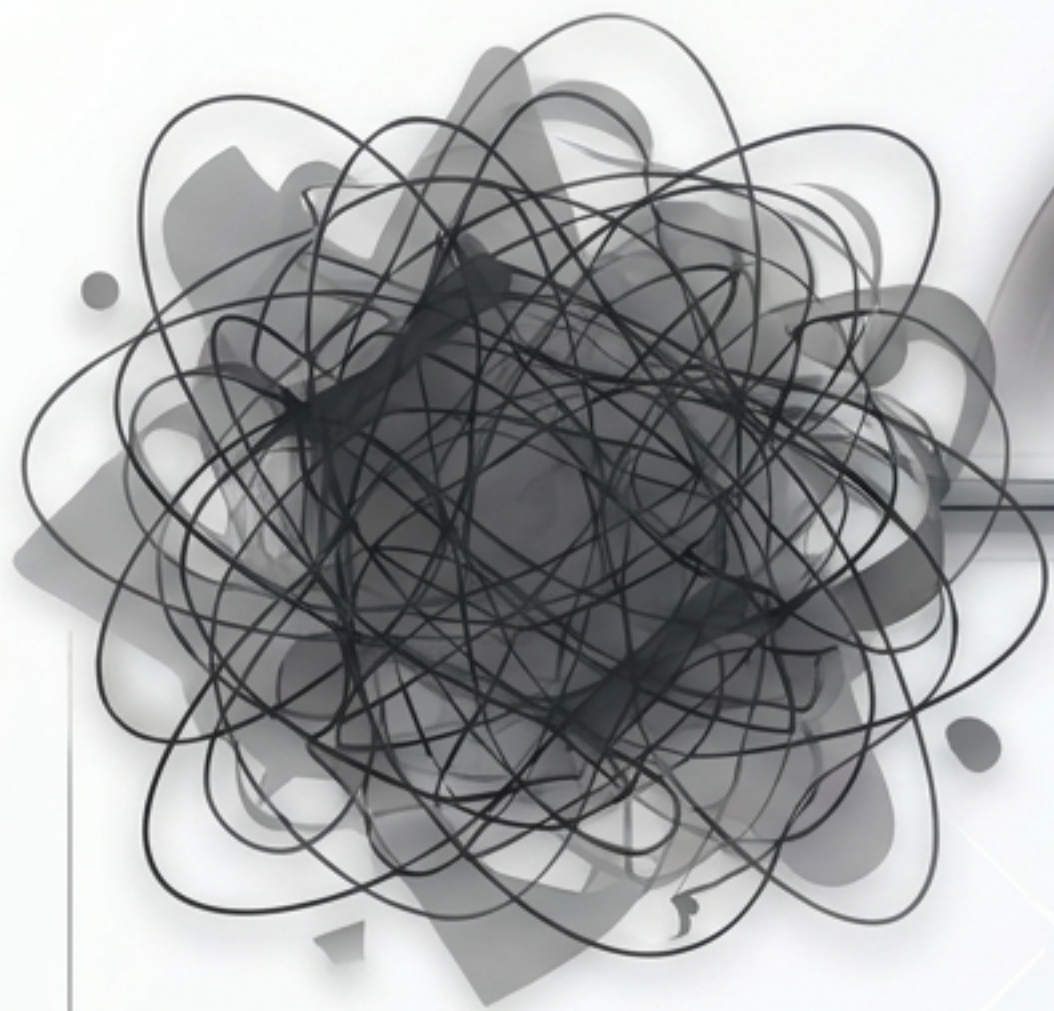
‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

# Ethereal Blueprint: The Science of Transformation

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

## नकारात्मक बहुमत



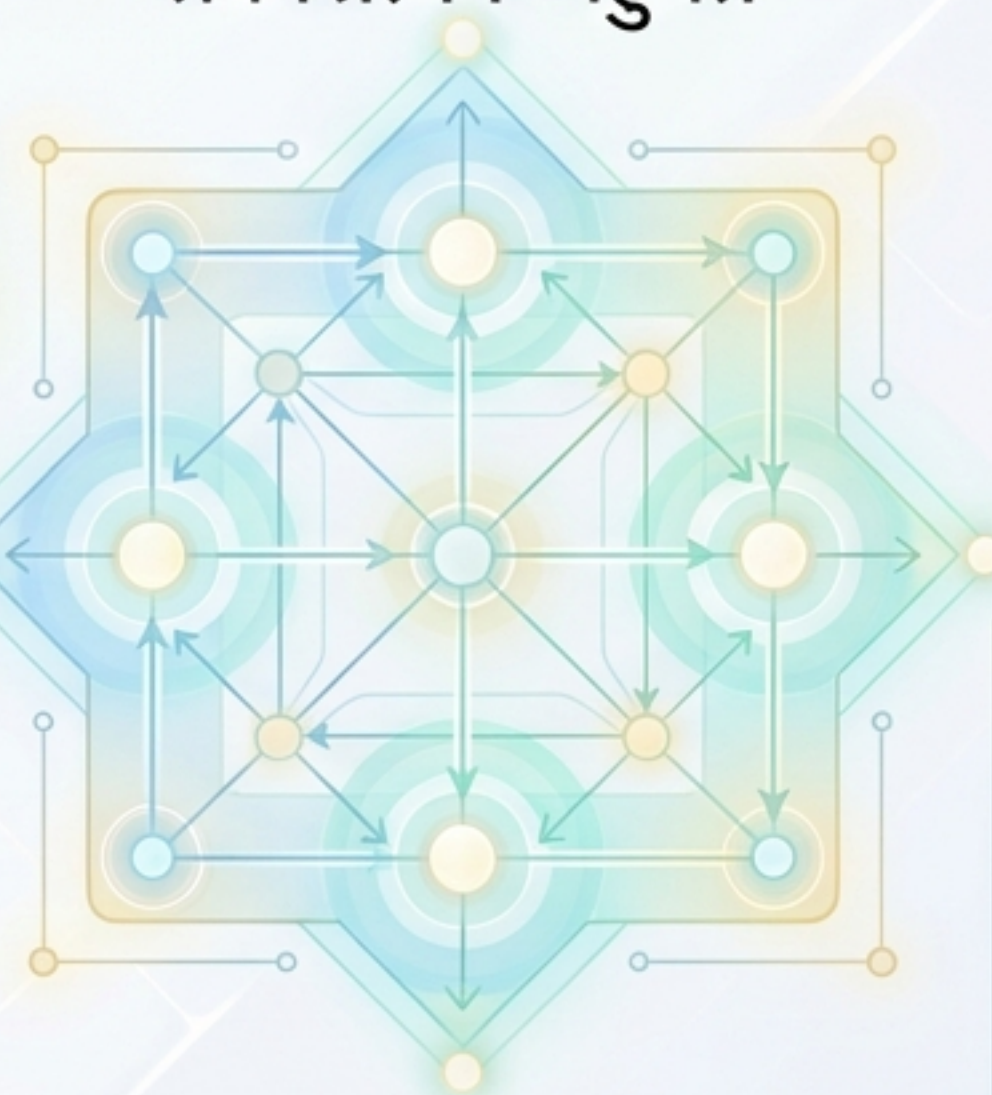
### समस्या

आज की अतिवादी अवांछनीयता केवल अधिकांश लोगों के अचिंत्य चिंतन का परिणाम है।

### समाधान का विज्ञान

यदि यह बहुमत उलट जाए, तो परिस्थितियाँ क्षण भर में बदल जाएँगी।

## सकारात्मक बहुमत



### परिवर्तन का स्वरूप

समाज से कम लेना और अधिक देना (सतयुगी परम्परा)।  
दैत्य प्रवृत्ति (लूटने वाले) देवत्व (देने वाले) में परिवर्तित होगी।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चीए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा व बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



**बीज से उद्यान:** धरती में दबा बीज  
→ अंकुर → वृक्ष → असेख्य  
फल/बीज → विशाल उद्यान।



**मत्स्यावतार प्रक्रिया:** कमण्डल की छोटी  
मछली का समूचे भूमंडल में विस्तार।



**वैज्ञानिक तथ्य:** शान्तिकुञ्ज से उत्पन्न एक छोटा आन्दोलन इसी घातीय वृद्धि (Exponential Growth) के सिद्धांत पर विश्वव्यापी चमत्कार उत्पन्न कर रहा है।

# संघशक्ति का विज्ञान

1

बूँद-बूँद = भरा हुआ घड़ा

2

तिनके = हाथी बाँधने वाला रस्सा

3

## निष्कर्ष

यह बहुमत और संघशक्ति का युग है।  
रीछ-वानरों और ग्वाल-बालों का संयुक्त  
पुरुषार्थ ही नव-निर्माण करेगा।

पक्षी = मजबूत जाल  
उड़ा ले जाने वाली शक्ति

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —  
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर  
का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही  
चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब  
बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे  
कान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक  
पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ  
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

# युगसन्धि महापुरश्चरण मास्टरप्लान

१ लाख दीपयज्ञ, १ करोड़ प्रतिभाओं  
की यजमान के रूप में भागीदारी।

१९९०  
(उद्गम)

१९९५  
(प्रथम चरण)

वसन्त पंचमी १९९० को  
वन्दनीया माताजी से —  
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।  
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में  
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —  
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को  
मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन  
तक पहुँचाने का प्रयास करें।”  
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति  
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

लक्ष्य दोगुना - २ लाख दीपयज्ञ,  
२ करोड़ भागीदार।

२०००  
(द्वितीय चरण)

विकेंद्रीकरण रणनीति:  
एक कुम्भ पर्व के बजाय लाखों स्थानीय केन्द्रों पर  
आयोजन—समय, धन और ऊर्जा की बचत।

# भौतिक क्षमता



५ तत्वों से निर्मित  
शरीर।  
सीमित सामर्थ्य।  
इंद्रियों (जीभ, आँख,  
कान) की तृप्ति  
तक सीमित।

वसन्त पंचमी १९९० को  
वन्दनीया माताजी से —

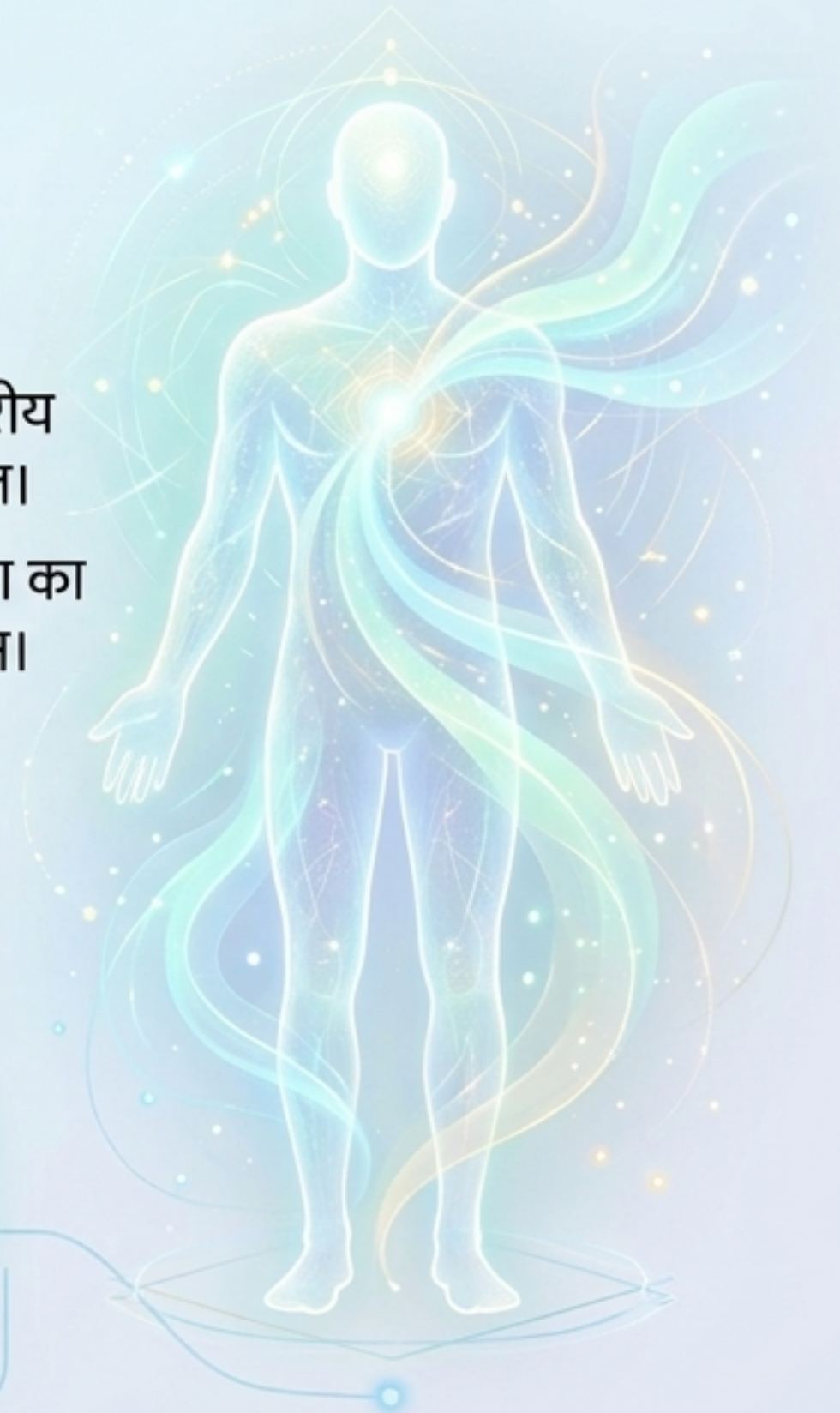
‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।  
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन  
के बीच में पहुँचना ही चाहिए  
और आप सबसे कहियेगा —  
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे  
ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी  
साहित्य के रूप में जन-जन तक  
पहुँचाने का प्रयास करें।’

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति  
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

## प्रमाण

गाँधी जी (५ फीट २ इंच, ९६ पौंड वजन) का भौतिक शरीर  
सामान्य था, परंतु उनके आत्मबल ने संसार को हिला दिया।

# आत्मिक क्षमता



उच्चस्तरीय  
मनोबल।  
दैवी चेतना का  
अनुदान।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — हेयेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’ — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री पं.)

## पात्रता का विज्ञान

- किसी बर्तन में कितना पानी आएगा, यह उसकी गहराई और चौड़ाई पर निर्भर है।
- मनुष्य के अन्तराल की ‘गहराई’ उसके आदर्शवादी पुरुषार्थ और पुण्य-परमार्थ से नापी जाती है।



$$\text{पात्रता} = \text{गहराई} \times \text{चौड़ाई}$$

### शर्त

दैवी अनुग्रह प्राप्त करने के लिए चिह्न-पूजा (कर्मकांड) पर्याप्त नहीं है, निष्ठापूर्वक उच्चस्तरीय पात्रता चाहिए।

# भाग्य परिवर्तन का विज्ञान

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश निदान जन के बीच में पहुँचना ही विश्लेषण और आप सबसे कटियोगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का।’

उपचार  
(Course Correction)



हस्तरेखाएँ और फोटोग्राफी केवल भविष्य जानने के लिए नहीं हैं। ये गुण, कर्म, स्वभाव और पूर्व-संस्कारों के सूक्ष्म विश्लेषण (Data Points) हैं।

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्तिष्ठ  
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

जिस प्रकार असाध्य रोग का चिकित्सा से उपचार संभव है, उसी प्रकार भवितव्यता (Destiny) के बीजों को पहचानकर आनिष्ट को रोका जा सकता है और अनुकूलता उत्पन्न की जा सकती है।

“

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —  
‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’ — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



## चयन प्रक्रिया

- हर मनुष्य हर क्षमता से सम्पन्न नहीं होता। भारी वजन केवल हाथी उठा सकता है, चींटी नहीं।
- रामायण में हनुमान और महाभारत में अर्जुन की भूमिका कोई सामान्य व्यक्ति नहीं निभा सकता था।
- उसी प्रकार, २१वीं सदी के कठोर मोर्चे के लिए विशिष्ट प्रतिभाओं की छँटाई की जा रही है।



वसन्त पंचमी १९९० को  
वन्दनीया माताजी से —  
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।  
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में  
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —  
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को  
मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन  
तक पहुँचाने का प्रयास करें।”  
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदपुर्ति तपोनिष्ठ  
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

## Queen Bee / Mission

## आध्यात्मिक ‘स्वार्म’

- जिस प्रकार विशेष क्षमता सम्पन्न मधुमक्खियाँ रानी मक्खी के अनुशासन में खिंची चली आती हैं, वैसे ही विशिष्ट परिजन इस मिशन से जुड़े हैं।
- यह कोई ‘रास्ता चलती भीड़’ नहीं है। यह विगत ५२ वर्षों से प्रशिक्षित योद्धाओं की एक शक्तिशाली अक्षौहिणी सेना है।
- इनकी जन्म-घुट्टी में उत्कृष्ट आदर्शवादिता घुली हुई है।

# आध्यात्मिक डेटा संकलन



## उद्देश्य

यह भविष्यफल बताने के लिए नहीं है!  
इसका उद्देश्य परिजनों की विशिष्टता  
(Capabilities) आँकना है, ताकि २१वीं  
सदी के महासंग्राम में सही समय पर  
सही व्यक्ति को उचित मार्गदर्शन और  
विशेष दायित्व सौंपा जा सके।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’ — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

## मानवीय पुरुषार्थ - Micro



जैसे किसान बीज बोता है (पुरुषार्थ)  
और सामर्थ्य की सीमा तक प्रयास  
करता है।

## दैवी अनुग्रह - Macro



किसान फसल के लिए वर्षा और  
ऋतुओं (दैवी कृपा) पर निर्भर है।

**अभूतपूर्व परिणाम**  
(Miraculous Outcome)

वसन्त पंचमी १९९० को  
वन्दनीया माताजी से –  
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।  
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में  
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा –  
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को  
मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन  
तक पहुँचाने का प्रयास करें।”  
– पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ  
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

## दैवी सहायता का तंत्र

जब मानव अपने सामर्थ्य की सीमा तक  
प्रयास करता है, तब ‘अपवाद’ या ‘भाग्य’ के  
रूप में ईश्वरीय सहायता कार्य पूरा करती है।  
जैसे पूँजी की कमी से रुका व्यापार बैंक  
ऋण से एकाएक चल पड़ता है।



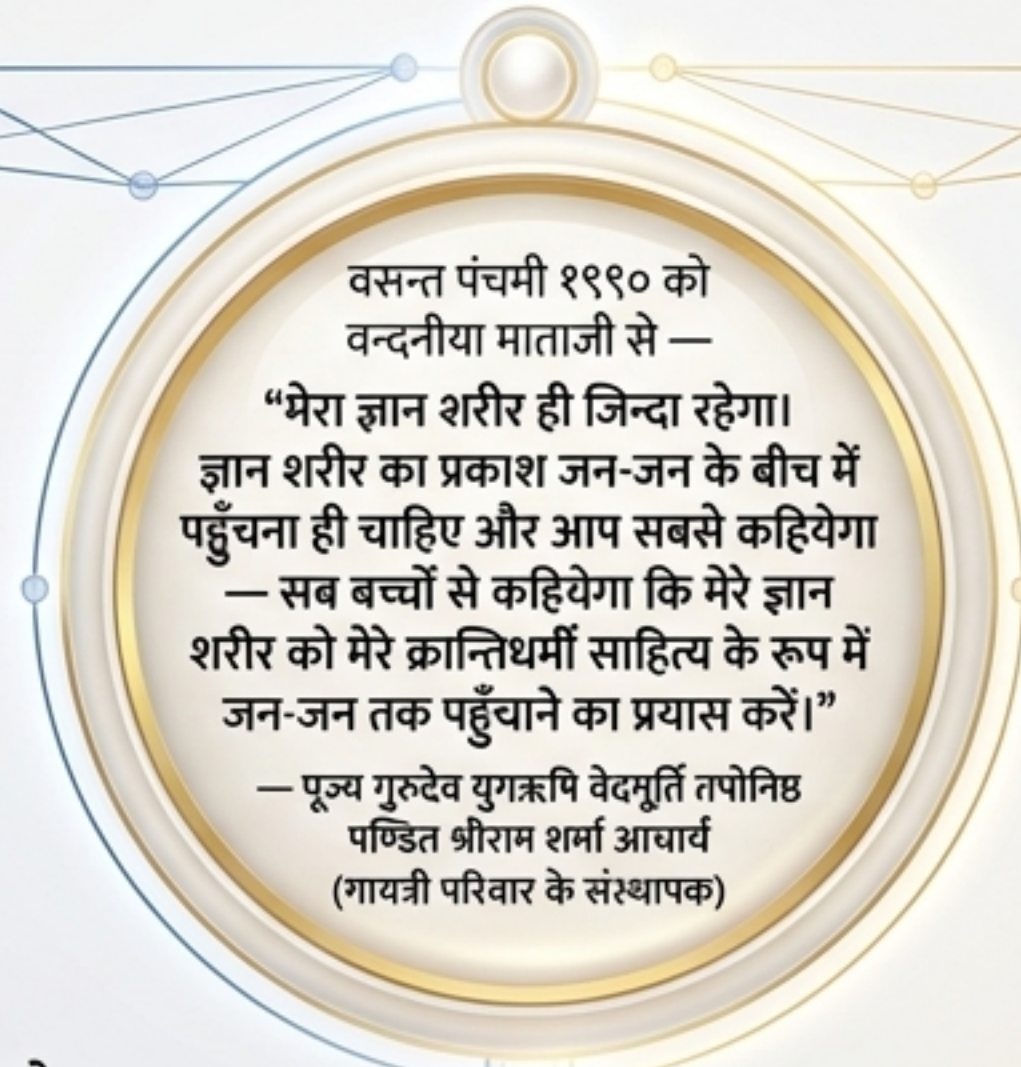
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — 'मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।' — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

# इक्कीसवीं सदी का दुहरा अभियान



## विनाश

समाज में छाई भयंकर अवांछनीयताओं और संकटों को निरस्त करना (इसके लिए सशक्त योद्धा चाहिए)।



वसन्त पंचमी १९९० को  
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।  
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में  
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा  
— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान  
शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में  
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ  
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



## सृजन

क्षतिपूर्ति के लिए विशालकाय नवनिर्माण खड़ा करना  
(इसके लिए अपार आध्यात्मिक पूँजी चाहिए)।

## पात्रता की आवश्यकता

भगवान स्वयं निर्माणकर्ता हैं, उन्हें इन कार्यों को तत्परता से पूर्ण करने के लिए  
सुयोग्य और साहसी सत्पात्रों की तत्काल आवश्यकता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर करा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

### प्राण का हस्तांतरण

पाँच तत्त्वों का शरीर नश्वर है, लेकिन 'प्राण' (चेतना) असीम और शाश्वत है। अवतारी सत्ताएँ अपने 'दिव्य प्राण' का एक हिस्सा चुने हुए व्यक्तियों में हस्तांतरित कर सकती हैं।

प्राण (Bio-energy) / शक्तिपात

### ईश्वरीय अनुग्रह का एकमात्र प्रमाण

दैवी अनुग्रह केवल चमत्कार नहीं है; यह वह साहस और उमंग है जो मनुष्य को महान और अनुकरणीय कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।